ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

मीडिया के विविध रूप और हिंदी

Various Forms of Media and Hindi

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

उषा सिन्हा
विभागाध्यक्ष,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय
भूपेन्द्र नारायण मंडल
विश्वविद्यालय,
उत्तरी परिसर, मधेपुरा,
बिहार, भारत

सारांश

आधुनिक युग मीडिया का युग है मीडिया जीवन और जगत के अंर्तसूत्रों को जोड़ता है। मीडिया के पैनेपन, विस्तार ताजगी और गहराई के कारण जनमानस प्रबुंध हो रहा है। वह हमें समाचार, विचार, अर्थ, राजनीति, विज्ञान, अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी, कला, उद्योग, फिल्म, फैशन, साहित्य, संस्कृत एवं स्वास्थ्य से परिपूर्ण तत्वों की जानकारी देता है। मीडिया की ताकत का लोहा सभी मानते हैं। मीडिया माहौल बनाता है तो बिगाड़ता भी है। मीडिया ऐसी शक्ति है, जिसका लोहा सभी मानते हैं। आज की व्यवस्था में मीडिया समाज एवं देश के लिए सलाहकार हित–चिंतक शिक्षक सेवक प्रहरी एवं शासक की भूमिका निभाता है। यह नाम एक और भूमिका अनेक वहन करने वाला शक्तिपुंज है।

किंतु आज मीडिया को सबसे अधिक जरूरत है भाषा के जानकार की वैसे मीडिया और हिंदी का गहरा रिश्ता है मीडिया बाजार की आवश्यकता है और हिंदी मीडिया की हिंदी का नीति निर्धारक केंद्र सरकार का राजभाषा विभाग ही नहीं बल्कि मीडिया को भी कहा जा सकता है। वेबसाइटों का हिंदी करण होते जाना इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर हिंदी के प्रभाव को बताता है इसलिए मीडिया के परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सामर्थ्य सीमा संभावनाओं पर दृष्टिपात करने की आवश्यकता लगातार महसूस होती रही है।

The modern era is the era of media. Media interconnects life and the world. Due to the sharpness, expansion, freshness and depth of the media, public perception is growing. It gives us information about news, ideas, meaning, politics, space, technology, arts, industries, films, fashion, literature, Sanskrit and health. All believe in the power of media. Media creates an atmosphere, it also spoils it. Media is such a power, which everyone believes is iron. In today's system, the media plays the role of advisor, thinker, teacher, guardian and ruler for society and country. Another name for this role is the multiple carrying Shaktipunj.

But today the media needs the most knowledgeable language, the media and Hindi have a deep relationship, the media market is needed and the policy-maker of Hindi of Hindi media can be called not only the official language department of the central government but also the media. The addition of Hindi to websites explains the impact of Hindi on the electronic media, so the need to look at the potential limits of Hindi in the media perspective has been felt constantly.

मुख्य शब्द : मीडिया, हिंदी, रेडियो, समाचार–पत्र, दूरदर्शन, फिल्म, साहित्य।
Media, Hindi, radio, newspaper, Doordarshan, film, literature.

प्रस्तावना

आज मीडिया की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, परंतु मैं मुख्य रूप से रेडियो समाचार पत्र दूरदर्शन सूचना एवं प्रौद्योगिकी ईकॉमर्स आदि के हिंदी की स्थिति पर विशेष रूप से चर्चा करना चाहूंगी। रेडियो बीसवीं शताब्दी में ही नहीं वरन 21वीं शताब्दी में भी मीडिया के क्षेत्र में महत्व बना रखा है। इन दिनों एफ० एम० रेडियो की धूम मची है। भारत में छोटे–मोटे किसान से लेकर महानगरों में बसे मजदूर उच्च वेतनभोगी एवं उधोगपति तक रेडियो को दोस्त बनाया है। अतः देखते–ही देखते रेडियो लोगों का अभिन्न अंग बन गया। राष्ट्रगीत, देशभक्ति गीत, भक्तिगीत, भावगीत, लोकगीत और सर्वाधिक फिल्मी गीतों ने आम आदमी को रेडियो के साथ बांध कर रखा। विनाका गीतमाल का इंतजार सबको रहता था, जो बुधवार की शाम में हुअं करता था। गीत के साथ अमीन सयानी के निवेदन का भी करिश्मा था। उनकी हिन्दी मे श्रोतागढ़ के कानो को संस्कारित किया – सरल, सहज और प्रवाहमयी हिन्दी को सुनने,

जानने, पहचानने के लिये रेडियो की उपयोगिता न सिर्फ दैनिक समाचार, बाजार समाचार, नाटक, लघु नाटक साक्षात्कार, संगीत, कीड़ा समालोचन, साहित्य, समाज और संस्कृति–विषयक विभिन्न कार्यक्रमों के कारण बढ़ती गई, बल्कि इसकी लोकप्रियता का एक और कारण है इसकी भाषा। राष्ट्रीय स्तर पर इसका श्रेय हिन्दी को जाता है। रेडियो प्रादेशिक भाषाओं के साथ–साथ हिन्दी को भी समान रूप से अपनाता है। रेडिमो के माध्यम से हिन्दी विदेशों में भी पहुंच गई। बी० बी० सी० लंदन तक हिन्दी ने रेडियो के जरिए अपनी जड़े और शाखाएँ फैला दी। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने एवं इसकी स्थिति को गति देने में रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस पर हिन्दी को दूषित करने का इल्जाम भी नहीं लगा।

समाचार पत्र और हिन्दी पर विचार करते समय हम देखते हैं कि समाचार पत्र में हिन्दी के अनेक रूप प्राप्त होते हैं, यथा–साहित्यिक, आंचलिक, बोलचाल, परिनिष्ठित, प्रादेशिक, विदेशी भाषाओं से प्रभावित आदि। वैसे प्रादेशिक भाषा के प्रभाव और सरलता की और अग्रसर गने के स्वभाव के कारण समाचार पत्रों की भाषा में सरलीकरण का दौर दिखाई देता है, इसे कुछ विद्वान हिन्दी का विकास मानते हैं, तो कुछ हिन्दी का विनाश। दैनिक समाचार पत्र को अपने अस्तित्त्व के लिये लोक भाषाभिमुख होना जरूरी है। समाचार पत्रो की सरल, जनाभिमुख भाषा को विद्वान बिगड़ी हुई भाषा समझते हैं, जो व्याकरण नियम को तोड़ती है। लेकिन, साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में व्याकरण के नियमों का उल्लंघन नहीं होता, ऐसी बात नहीं है। डा० अर्जुन चव्हान लिखते हैं– "अहम् सवाल भाषा के बनने–बिगड़ने का नहीं, सवाल है उसके प्रयोग–अप्रयोग का, उसकी बढ़ती–घटती मात्रा का, उसमें नव निर्माण के स्वीकारने–नकारने का और उसकी परिवर्तनशीलता – अपरिवर्तनशीलता का। अगर प्रयोग होता है और बड़ी मात्रा में होता है, नवनिर्माण का स्वीकार करने हेतु वह परिवर्तनशील है, तो समझना चाहिए कि यह उसकी सार्थकता की निशानी है और जीवंतता की भी। ठीक इसके विपरीत बात दिखाई देती है उस भाषा की, जो केवल बड़े–बड़े ग्रंथों को सजाने वाले ग्रंथालय में कैद होकर रहती है, जिसके जबान पर कोई अस्तित्व नहीं होता और नव निर्माण एवं परिवर्तन को स्वीकारने के लिये जिसमें कोई गुंजाइश नहीं होती।"[2]

समाचार पत्र के माध्यम से हिन्दी पल्लवित होती रही है, इसमें कोई दो मत नहीं। अभी के समय में मीडिया का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप हैं–दूरदर्शन। हिन्दी का विकास दूरदर्शन के माध्यम से दूतगति से हुआ है। आज के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी को जन–जीवन के बीच पहुँचाने में दूसरे माध्यम की तुलना में दूरदर्शन प्रभावी साधन साबित हुआ है। भारत में दूरदर्शन की विकास यात्रा 1964 ई0 में प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम दिल्ली ही एकमात्र टेलीविजन केन्द्र था। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से सम्बद्ध दूरदर्शन महानिदेशालय का लक्ष्य था – सामाजिक परिवर्तन में प्रेरक भूमिका निभाना, राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देना। जन–सामान्य में वैज्ञानिक चेतना जगाना परिवार कल्याण और जनसंख्या नियंत्रण के संदेश को प्रसारित करना, कृषि–उत्पादन प्रोत्साहित कर हरित क्रान्ति और पशुपालन को बढ़ावा देकर 'श्वेत क्रान्ति' के क्षेत्र में प्रेरणा देना, पर्यावरण–संतुलन बनाये रखना, गरीब और निर्बल वर्गों हेतु सामाजिक कार्यकलापो के उपायों पर बल देना, खेल–कूद में रूचि बढ़ाना, भारत की कला और सांस्कृतिक गरिमा के प्रति जागरूकता पैदा करना आदि। इन सभी लक्ष्यों पर तो दूरदर्शन ने ध्यान दिया लेकिन यदि हिन्दी भाषा के विस्तार और लोकप्रिय बनाने की बात इनके लक्ष्यों में शामिल होता, तो परिणाम और भी अच्छे होते। इसके बावजूद हिन्दी को जन–जन के बीच पहुंचाने में अन्य संचार साधनों की तुलना में दूरदर्शन सबसे प्रभावी साधन सिद्ध हुआ है। घ्वनि और दृश्य का नजारा लेकर आने वाला यह साधन जन–जीवन की आवश्यकता एवं आकर्षण बन पड़ा है। इसने निम्न वर्गीय सबकों में भी अपनी जड़े जमायी है। शहरों, नगरों, महानगरों की गंदी बस्तियों और झोपड़पट्टियों में ही नहीं, दूर–दराज के गाँवों में भी इसने प्रवेश ले लिया है। साथ ही हिन्दी की विकास यात्रा भी इसके माध्यम से समाज के हर वर्ग ही नहीं, वरन विदेशों तक पहुँची है।

यह प्रश्न अलग है कि इसने हिन्दी को बनाने में योगदान किया है या बिगाड़ने में ? यदि उसें भाषिक दोष दिखाई देता है, तो उसने सुधारने का दायित्व हमें निभाना चाहिए। परंतु, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि जहाँ राजनीति ने प्रशासनिक स्तर पर हिन्दी को दर–दर की ठोकरें खाने के लिये छोड़ दिया, वहाँ दूरदर्शन ने उसे घर–घर पहुंचाया। दूरदर्शन ने प्रत्येक समाज, वर्ग, उम्र, क्षेत्र आदि के लिये विभिन्न चैनल एवं प्रोग्राम बना लिया है। आज यह करने में कोई संकोच नहीं कि 'हर मर्ज की दवा दूरदर्शन"।

हिन्दी का सर्वाधिक प्रयोग हमें इसके विज्ञापनों में दिखाई देता है। 'ठंडा मतलब कोका कोला' आदि कितने वाक्य हैं, जो विज्ञापन के कारण लोगों के दिल–दिमाग में गूँजते रहते हैं। हिन्दी के बिना दूरदर्शन के चैनलों की कल्पना नहीं की जा सकती है इसी वजह से हिन्दी आज जनभाषा के रूप में स्थापित हो रही है। भले ही वह राष्ट्रभाषा के रूप में उपेक्षित रही हो। अतः हिन्दी हमेशा दूरदर्शन की ऋणी रहेगी।

दूरदर्शन के साथ–साथ फिल्म ने भी हिन्दी का विस्तार किया है। दक्षिण में भले ही हिन्दी का विरोध हो, परन्तु हिन्दी फिल्मों के गीत सर्वत्र गाये जा रहे हैं। चेन्नई में बनने वाली फिल्मों में सबसे अधिक संख्या हिन्दी फिल्मों की है (सम्पूर्ण पत्रकारिता–अजुन तिवारी)। हिन्दी के प्रति आस्थाभाव जागरित करने में फिल्म सशक्त सिद्ध हुई है।

फिल्म में ऐसी शक्ति है, जो ढाई–तीन घंटों में ही विशाल जीवनपट को खोल देती है भाव–बोध और जीवन–बोध की यह रंगीन दुनिया दर्शकों को मोह लेती है। फिल्म को समझने के लिये हिन्दीतर भाषी लोग हिन्दी सीखने के लिये लालायित रहते हैं। वैसे भाषाविद् फिल्मी हिन्दी को बिगड़ी हुई हिन्दी मानते हैं। यह सही है, किन्तु, हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य जितना फिल्मों ने किया है, उतना शायद ही हिन्दी के विभिन्न तरह के

पुरस्कारों से सम्मानित कोई रचनाकार ने किया हो फिल्मी हिन्दी दोषयुक्त है, फिर भी जनता की जबान पर स्थापित करने का कार्य इसी माध्यम ने किया है। डॉ0 अर्जुन तिवारी के मतानुसार–"चलचित्र में विज्ञान की शक्ति और कला का सौन्दर्य है, जो मस्तिष्क को खाद्य देती है और ह्रदय को आंदोलित करती है वास्तव में जन जागरण के सशक्त माध्यम के रूप में चलचित्रों का प्रभाव अमिट है। यह ऐसा प्रभावकारी माध्यम है, जिसने सभी उम्र के लोगों के मानस की झंकृत कर दिया है। राष्ट्रीय एकता, अच्छतोद्वार नारी जागरण, अन्याय, शोषण, भाषावाद, क्षेत्रवाद जातिवाद, सम्प्रदायवाद–जैसे राष्ट्रीय हित के प्रश्नों पर जन–जन को जागरित करने वाला माध्यम फिल्म ही है। ललित कलाओं के संगम के रूप में प्रस्तुत फिल्म सामाजिक–राजनीतिक चेतना का साधन तो है ही, इसमें जानता को प्रशिक्षित करने की अदभुत क्षमता भी है।" [3] फिल्मों के प्रभावी संवाद लोगों कानों में गूंजते रहते है, जिससे उसकी भाषा से कान संस्कारित होते है। लता जी के गीत लोगों में हिन्दी के प्रति प्रेम पैदा करते है, तो अमिताभ बच्चन जी–जैसे अभिनेता के संवाद हिन्दी के प्रति आकर्षण। अतः फिल्म मनोरंजन का साधन होते हुए भी हिन्दी को जनता की जवान पर स्थापित करने में न केवल देश वरन विदेश में विगत छः सात दशकों से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। हम हिन्दी के विकास में इसके योगदान की उपेक्षा नहीं कर सकते।

आधुनिक युग में एक और प्रचलित विषय है – सूचना और प्रौद्योगिकी (Information Technology) इसके ज्ञान के बिना व्यक्ति पिछड़ा साबित हो रहा है 160 करोड़ शिक्षित भारतीयों में सिर्फ तीन करोड़ भारतीय ही अंगरेजी बोल सकते है। बाकी 57 करोड़ लोग अपनी–अपनी मातृभाषा या हिन्दी पर आश्रित है इस क्षेत्र में भी हिन्दी फैलती जा रही है। इसका प्रमुख कारण हिन्दी का जनभाषा होना है। मोबाईल फोन सूचना एवं प्रौद्योगिकी का अभिन्न अंग है, जिस पर हिन्दी का प्रयोग सुलभ से है। मेलजोल और वेबदुनिया–जैसे हिन्दी मेल पोर्टल ने जड़े जमा ली हैं, एम0 एस0 ऑफिस नामक सुप्रसिद्ध पैकेज का हिन्दी रूपांतर माइक्रोसॉफ्ट ने बाजार में उतारा है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी में हिन्दी का आरम्भ होना सुखद भविष्य का संकेत है। इसमें देवनागरी लिपि को संगणक के अनुकूल पाया जाना बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। इसके मुख्य अंग है– संगणक, इटंरनेट, ईमेल, वाइस मेल, फैक्स आदि। हिन्दी में सॉफ्टवेयर, इंटरनेट पोर्टल, वेवसाइट का निर्माण होना उसके भविष्य के लिये सुखद होगा। आवश्यकता है – सुनियोजित कोशिश करने की।

इतना ही नहीं, हिन्दी ई–कॉमर्स तक भी पहुंच गई है। अब इंटरनेट के माध्यम से भौगोलिक सीमा को लाँधकर दुनिया के किसी भी कोने में व्यापार किया जा सकता है इसके माध्यम से घर बैठे वन, रेल एवं हवाई जहाज के टिकट मँगवाये जा सकते हैं। साथ ही, सिनेमा के टिकट, राशन, सब्जी, मिठाई आदि भी मंगवायी जा सकती है। बाजार में एक वस्तु के मूल्य में अंतर होता है, परन्तु ई–कॉमर्म (इंटरनेट) से यह अंतर तुरंत ज्ञात हो जाता है। इसमें मोलजोल और ठगने की सम्भावना नहीं रहती है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि मीडिया के माध्यम से हिन्दी विकसित हो रही है, इसमें संदेह नहीं लेकिन, आधुनिक युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग। हिन्दी को उसके अनुकूल बनाने के लिये सुनियोजित एवं निरंतर प्रयास की आवश्यकता है, यथा –

1. सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ एवं भाषाविद् की कमिटि बनाकर उसे यह काम सौंपना चाहिए कि वह हिन्दी को उस अनुरूप ढालने का प्रयास करें। सभी प्रकार के मीडिया में भाषा सलाहकार का पद हो, जो विषय के अनुरूप हिन्दी को ढाले, ताकि उसमें कोई त्रुटि ना हो।
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिये सरल पारिभाषिक शब्दावली बनायी जाय, जिसमें बोलचाल की भाषा से परहेज ना हो।
3. नए शब्दों को प्रतिभावान एवं लोकप्रिय व्यक्तियों के मुख से बोलवाया जाय, जिससे वह प्रचलित हो सके।

लेखक का मानना है कि केवल हिन्दी पढ़ने या पढ़ाने वाले ही नहीं, वरन भारत के सभी नागरिक को हिन्दी भाषा के प्रयोग करने पर गर्व महसूस करना चाहिए। यह हमारी राजभाषा है और आज बोलने वाले की संख्या के आधार पर विश्व में सम्पर्क भाषा बनने की क्षमता रखती है।

हमें प्रादेशिक भाषा की तरह अंगरेजी के प्रचलित शब्दों को अपनाने से परहेज नहीं करना चाहिए। भाषिक शुद्धता का अतिरिक्त आग्रह नहीं छोड़ेंगे और नव गठित, सर्व ज्ञात शब्द नहीं अपनायेंगे, तो हिन्दी के नुकसान के लिये जिम्मेवार हम होंगे। जैसे–संगणक के शब्द 'सॉफ्टवेयर' के लिये 'मुद्र–वस्त्र' 'मदरबोर्ड' के लिये 'मातृ–पटल' और "माऊस' के लिये 'चूहा'–जैसे हिन्दी पर्याय बना देंगे, तो हिन्दी को हास्यास्पद बना देंगे।

हमें निष्क्रियता और तटस्थता को छोड़ना होगा, क्योंकि हमारे सक्रिय सहभाग से ही हिन्दी के विकास को गति मिलेगी।

आज अँगरेजी दुनिया की सबसे अशुद्ध भाषा होते हुए भी सबसे समृद्ध है क्योकि, इस भाषा ने दुनिया की किसी भी भाषा के बहुप्रचलित एवं नये शब्दों से परहेज नहीं किया। परिणामस्वरूप यह दिनोंदिन समृद्ध होती गई। यह उदारता हिन्दी को भी सीखनी होगी।

अब अध्यापक को नैतिक एवं सामाजिक दायित्व के साथ आर्थिक दायित्व भी वहन करना होगा उन्हें साहित्य शास्त्र के साथ–साथ भाषा का प्रयोजन मूलक पक्ष पर विशेष ध्यान देना होगा।

शोध विधि

विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध विधि पर आधारित शोध पत्र है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस प्रकार, हम देखते हैं कि हिन्दी जनभाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। मीडिया ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। मीडिया ऐसा साधन है, जिसमें हिन्दी को स्थापित करने की शक्ति है। अतः मीडियाकालीन

हिन्दी को प्रयोजनपरक होने से रोकना उचित नहीं है। डिजिटल प्रणाली और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने सीमाहीन सम्भावनाओं की ओर इशारा किया है।

निष्कर्ष

आज भूमंडलीकरण का दौर चल रहा है। लेकिन, भाषा के बिना संचार माध्यम, विज्ञान, उद्योग और व्यापार सभी मूक हैं। इसलिये हिन्दी को अपनाना इनकी मजबूरी है बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी भारत में अपने व्यवसाय को विकसित करने हेतु हिन्दी को अपनाने के लिये विवश हैं अतः हिन्दी में अब रोजगार की सम्भावनाएँ भी बढ़ती जा रही हैं। यह परिवर्तन उसके बेहतर भविष्य की ओर इंगित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ0 अर्जुन चव्हाण : 'मीडियाकालीन हिन्दी स्वरूप एवं सम्भावनाए' – पृ0 सं0 – 07*
2. *उपरिवत् – पृ0 सं0 – 50*
3. *डॉ0 अर्जुन तिवारी : 'सम्पूर्ण पत्रकारिता'–पृ०सं०404*
4. *डॉ0 अर्जुन चव्हाण : 'मीडियाकालीन हिन्दी स्वरूप एवं सम्भावनाएँ– पृ0 सं0 – 53*
5. *हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम– डा0 जितेन्द्र वत्स, पृ0 सं0 – 209*
6. *उपरिवत्– पृ0 सं0 – 217*